National Journal of Multidisciplinary Research and Development
ISSN: 2455-9040; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 20-09-2020; Accepted: 05-09-2020; Published: 21-10-2020
www.nationaljournals.com
Volume 5; Issue 4; 2020; Page No. 06-07

पंत के काव्य पर प्रगतिवाद का प्रभाव

प्रिंस कुमार
छात्र, शिक्षा विभाग, साई नाथ विश्वविद्यालय, राँची, झारखंड, भारत

सारांश
प्रस्तुत शोध पत्र में प्रकृति के सुकुमार कवि' एवं छायावाद के चार स्तंभों में से एक प्रमुख स्तंभ सुमित्रानंदन पंत के काव्य पर प्रगतिवाद के प्रभाव का अध्ययन किया गया है। इस शोध के माध्यम से यह जानने का प्रयास किया गया है कि पंत के काव्य पर प्रगतिवाद का कैसे, कितना और क्या प्रभाव पड़ा है। इसके साथ ही यह भी जानने का प्रयास किया गया है कि प्रगतिवाद से पंत का मोहभंग कब, कैसे और क्यों हुआ। अंततः पंत हिंदी साहित्य के एक प्रमुख हस्ताक्षर है अतः उनकी रचनाओं एवं विचारधाराओं की जानकारी अपेक्षित है।

मूल शब्द: प्रगतिवाद, छायावाद, साम्यवाद, शोषण

प्रस्तावना

सन 1935 ई० में लखनऊ में प्रगतिशील लेखक संघ की स्थापना एवं सन 1936 ई० के बैठक में मुंशी प्रेमचंद के द्वारा दिए गए भाषण से भारतीय साहित्य के क्षेत्र में प्रगतिवाद का प्रारंभ माना जाता है। हिंदी साहित्य की दृष्टि से 1935-36 ई० का समय बड़ा ही परिवर्तनशील था। यह समय था छायावाद के अंत एवं प्रगतिवाद के आरंभ का।

साहित्य में प्रगतिवाद का अर्थ है रचनाओं पर मार्क्सवाद का प्रभाव। जिसे यथार्थवाद के रूप में भी जाना जाता है। जहाँ द्वंद्वात्मक भौतिकवाद एवं मार्क्सवाद के प्रगतिशील विचारों को आश्रय दिया जाता है। डॉ० रामविलास शर्मा प्रगतिवाद के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए कहते है "प्रगतिवाद साहित्य की धारा नहीं है, साहित्य का मार्क्सवादी दृष्टिकोण है, जैसे इस सिद्धांत साहित्य की धारा नहीं है, साहित्य का प्राचीन आध्यात्मिक दृष्टिकोण है। अतः प्रगतिवाद को सौंदर्यशास्त्र संबंधी मार्क्स दृष्टिकोण समझना चाहिए।"१ सीधे शब्दों में कहे तो प्रगतिवाद के अंतर्गत साधारण जनों की आवाज को उठाया जाता है तथा समाज की वस्तु-स्थिति को हूबहू प्रस्तुत किया जाता है।

जहाँ तक बात है छायावादी कवियों पर प्रगतिवाद के प्रभाव का तो छायावादी कवियों में प्रगतिवाद का सबसे पहला प्रभाव सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' पर हुआ। और 'पंत' अचानक ही प्रगतिवादी हो गए हो ऐसी बात भी नहीं है। छायावादी कवि जिस कल्पना लोक में रहकर काव्य रचना कर रहे थे उस स्वप्न का टूटना तो तय था ही और इसका आभास परिवर्तन कविता से ही देखने को मिलने लगता है तथा इसका प्रभाव 1935 ई० से 1945 ई० तक की सभी रचनाओं में भी दिखाई देता रहता है।

1935 ई० में उनकी पहली प्रगतिवादी रचना आई थी 'युगांत'। युगांत में पंत अपने सपनों को छोड़कर वास्तविकता के कठोर धरातल पर उतरते हैं। वे प्रकृति-प्रशंसा को छोड़ मानव का गुणगान करते हुए कहते है --

"सुंदर है विहग, सुमन सुंदर सुंदर
मानव तुम सबसे सुंदरतम।"२

इसके साथ ही कभी निष्प्राण प्राचीनता, निरर्थक रूढ़िवादिता आदि के प्रति तीव्र आक्रोश एवं उग्र क्षोभ प्रकट करते हुए कहते हैं

"द्रुत झरो जगत के जीर्ण पत्र !
है स्रस्त-ध्वस्त ! हे शुष्क-शीर्ण
हिम-ताप-पीत, मधुवात-भीत
तुम वीत-राग, जड़, पुराचीन !"३

यद्यपि वे प्रगतिवादी कविताएँ लिखना प्रारंभ कर चुके थे तथापि उसके प्रति वे पूर्ण आस्थावान नहीं हुए थे। सम्भवतः यही कारण है कि इस काव्य संग्रह में गाँधीवादी विचारधारा की भी झलक मिलती हैं।

युगवाणी' (1938 ई०) के प्रकाशन तक वे पूर्ण रूप से मार्क्स के विचारों से प्रभावित हो चुके थे जिससे उनका स्वर और भी तीव्र हो गया था। उन्होंने अपनी इस रचना में जन-सामान्य के शोषण के प्रति तीव्र क्रोध प्रकट किया तथा एक ऐसे नए समाज के निर्माण की इच्छा प्रकट की जिससे जिसमें शोषण-विहीन मानव रहता है। जहाँ जनता की नैतिक आवश्यकताओं की पूर्ति होती हो, वर्ग भेद न हो, सभी मनुष्यों को रोटी, कपड़ा, मकान के साथ-साथ बौद्धिक एवं मानसिक विकास के समान अवसर प्राप्त हो।

वे लिखते है :

"श्रेणी में हो मानव नहीं विभाजित
धन बल से ही जहाँ न जन-श्रम शोषण,
पूरित भव-जीव-जीवन के निखिल प्रयोजन।"४

कवि भौतिकवाद पर बल एवं मार्क्स के सिद्धांतों का विवेचन करते हुए लिखते है

"कहता भौतिकवाद, वस्तु जग का कर तत्वान्वेषण--
भौतिक भव ही एकमात्र मानव का अन्तर दर्पण !

स्थूल सत्य आधार, सूक्ष्म आधेय, हमारा जो मन,
बाध्य विवर्तन से होता युगपत अन्तप परिवर्तन !
राष्ट्रों के आदर्श, धर्म गत रीति, नीति औ' दर्शन
स्वर्ण-पाश है : मुक्ति योजना सामूहिक जन जीवन ।"५

इसके पश्चात कवि अपने साथी कवियों को भी स्वप्नलोक छोड़ शोषित, पीड़ित एवं दलित जनों की आवाज बनने का आह्वान करते हुए लिखते हैं:

"ताक रहे हो गगन ?
मृत्यु-नीलिमा-गहन गगन ?
अनिमेष, अचितवन काल नयन ?
निस्पंदन शून्य निर्जन निस्वन ?
देखो भू को ।
वीर प्रसू को ।"६

पंत जी की तीसरी प्रगतिवादी रचना है 'ग्राम्या' । ग्राम्या में पंत जी ने ग्रामीण जीवन का यथार्थ चित्र प्रस्तुत किया है। उनकी ग्राम्य युवती, ग्राम्य नारी, गाँव के लड़के, धोबियों का नृत्य, ग्राम श्री, चमारों का नृत्य, वह बुढ्ढा, कहारो का रुद्र नृत्य आदि कविताएँ ग्रामीण जीवन के यथार्थ चित्रण के साथ-साथ ग्रामीण संस्कृति के मार्मिक चित्र को प्रस्तुत करती हैं। इन कविताओं में कवि का असंतोष, व्याकुलता एवं संवेदनशीलता भी दिखलाई पड़ती है।
धोबियों, कहारों और कुम्हारों के नृत्य का चित्रण करते हुए कवि लिखते हैं :

"वर्णों के पद दलित चरण ये
मिटा रहे निज कसक औ कुढ़न
कर उच्छश्रृंखलता, उद्धतपन ।"७

गाँव में रहने वाले लोगों के पास न वस्त्र है, न घर है, शिक्षा, कला और संस्कृति तो बहुत दूर की बात है। कवि का मानना है कि यह गाँव भी तो इसी देश का अंग है फिर यहाँ इतनी भिन्नता क्यों ? कवि लिखते हैं :

"यहाँ धरा का मुख कुरूप है
कुत्सित गर्हित जन का जीवन,
सुंदरता का मूल्य वहाँ क्या
जहाँ उदर है क्षुब्ध, नग्न तन ।"८

निष्कर्ष

प्रकृति के सुकुमार कवि कहे जाने वाले पंत छायावाद के स्वप्नलोक से भले ही धरती पर आ गए हो परंतु इसके बाद उन्होंने जिस वाद का दामन थामा उससे उनकी व्यक्तिगत या साहित्यिक प्रगति तो खूब हुई पर आंतरिक रूप से वे इससे प्रसन्न नहीं थे । और शायद यही कारण था कि वे आगे चलकर प्रगतिवादी भी न रह सके। वे नवजागरण के लिए जिस प्रकार की क्रांति लाना चाहते थे उसके लिए मार्क्सवादी विचारधारा उन्हें रास नहीं आई । उनका मानना था कि सामूहिक विकास के लिए मार्क्सवाद ठीक है परंतु प्रगतिवाद की काव्य दृष्टि केवल धनपतियों तथा मध्यवृत्ति वालों के प्रति विद्वेष और विक्षोभ ही उगलता रहा है जिससे समाज में सदा वैमनस्य तथा विरोधाभास की स्थिति बनी ही रहेगी और समाज में शांति एवं खुशहाली लाना कठिन हो जायेगा। अंततः वे अरविंद दर्शन की ओर आकृष्ट हो गए।

सन्दर्भ सूची

1. प्रगतिशील साहित्य की समस्याएँ, डॉ० रामविलास शर्मा, पृष्ठ-५४
2. युगांत, द्रुत झरो जगत के जीर्ण पत्र, पृष्ट-१
3. युगांत, मानव, पृष्ट-४६
4. युगवाणी, नव संस्कृति, पृष्ट-६
5. युगवाणी, भूत दर्शन, पृष्ट-२७
6. युगवाणी, पुण्य प्रसू, पृष्ट-७
7. ग्राम्या, चमारों का नाच, पृष्ट-४६
8. ग्राम्या, ग्राम कवि, पृष्ट-१३